

## Chapter 5 सूक्तिमौक्तिकम्

2marks

प्रश्न 1.

एकपदेन उत्तरं लिखत-(एक पद में उत्तर लिखिए)

(क) वित्ततः क्षीणः कीदृशः भवति?

(धन से क्षीण कैसा होता है?)

उत्तरम् :

अक्षीणः।

(ख) कस्य प्रतिकूलानि कार्याणि परेषां न समाचरेत्?

(किसके प्रतिकूल कार्य दूसरों के साथ आचरण नहीं करने चाहिए?)

उत्तरम् :

आत्मनः।

(ग) कुत्र दरिद्रता न भवेत्?

(कहाँ दरिद्रता नहीं होनी चाहिए?)

उत्तरम् :

वचने।

(घ) वृक्षाः स्वयं कानि न खादन्ति?

(वृक्ष स्वयं क्या नहीं खाते हैं?)

उत्तरम् :

फलानि।

(ङ) का पुरा लघ्वी भवति?

(क्या पहले छोटी (कम) होती है?)

उत्तरम् :

परार्द्धस्य छाया/सज्जनानां मैत्री।

प्रश्न 2.

अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत

(अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-)

(क) यत्नेन किं रक्षेत् वित्तं वृत्तं वा?

(प्रयत्नपूर्वक किसकी रक्षा करनी चाहिए, धन की अथवा चरित्र की?)

उत्तरम् :

यत्नेन वृत्तं रक्षेत्।

[प्रयत्नपूर्वक आचरण (चरित्र) की रक्षा करनी चाहिए।]

(ख) अस्माभिः कीदृशं आचरणं न कर्तव्यम्?

(अस्माभिः किं न समाचरेत्?)

(हमारे द्वारा किस प्रकार का आचरण नहीं किया जाना चाहिए?)

उत्तरम् :

अस्माभिः आत्मनः प्रतिकूलं न समाचरेत्।

(हमारे द्वारा स्वयं के विपरीत आचरण नहीं करना चाहिए।)

(ग) जन्तवः केन तुष्यन्ति? (प्राणी किससे सन्तुष्ट होते हैं?)

उत्तरम् :

जन्तवः प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति।

(प्राणी मधुर वचन बोलने से सन्तुष्ट होते हैं।)

(घ) सज्जनानां मैत्री कीदृशी भवति?

(सज्जनों की मित्रता कैसी होती है?)

उत्तरम् :

सज्जनानां मैत्री दिनस्य परार्ध छाया इव आरम्भे लघ्वी पश्चात् च गुर्वी भवति।

[सज्जनों की मित्रता दिन के परार्ध (मध्याह्न पश्चात्) की छाया के समान आरम्भ में छोटी और बाद में वृद्धि को प्राप्त करने वाली होती है।]

(ङ) सरोवराणां हानिः कदा भवति?

(सरोवरों की हानि कब होती है?)

उत्तरम् :

यदा हंसाः तान् परित्यज्य अन्यत्र गच्छन्ति।

(जब हंस उनको छोड़कर अन्यत्र चले जाते हैं।)

प्रश्न 3.

'क' स्तम्भे विशेषणानि 'ख' स्तम्भे च विशेष्याणि दत्तानि, तानि यथोचितं योजयत

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
-------------	-------------

(क) आस्वाद्यतोयाः	1. खलानां मैत्री
(ख) गुणयुक्तः	2. सज्जनानां मैत्री।
(ग) दिनस्य पूर्वार्द्धभिन्ना	3. नद्यः
(घ) दिनस्य परार्द्धभिन्ना	4. दरिद्रः

• उत्तरम् :

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(क) आस्वाद्यतोयाः	3. नद्यः
(ख) गुणयुक्तः	4. दरिद्रः
(ग) दिनस्य पूर्वार्द्धभिन्ना	1. खलानां मैत्री
(घ) दिनस्य परार्द्धभिन्ना	2. सज्जनानां मैत्री।

प्रश्न 4.

अधोलिखितयोः श्लोकद्वयोः आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत -

(क) आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण  
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्  
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना  
छायेव मैत्री खलसजनानाम् ॥

(ख) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।  
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

उत्तर :

[नोट-उपर्युक्त दोनों श्लोकों का आशय पूर्व में पाठ के हिन्दी-अनुवाद के साथ दिया जा चुका है, वहाँ से देखकर लिखिए।]

प्रश्न 5.

अधोलिखितपदेभ्यः भिन्नप्रकृतिकं पदं चित्वा लिखत -

(क) वक्तव्यम्, कर्तव्यम्, सर्वस्वम्, हन्तव्यम्।

उत्तरम् :

सर्वस्वम्।

(ख) यत्नेन, वचने, प्रियवाक्यप्रदानेन, मरालेन।

उत्तरम् :

वचने।

(ग) श्रूयताम्, अवधार्यताम्, धनवताम्, क्षम्यताम्।

उत्तरम् :

धनवताम्।

(घ) जन्तवः, नद्यः, विभूतयः, परितः।

उत्तरम् :

परितः।

प्रश्न 6.

स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्नवाक्यनिर्माणं कुरुत -

(क) वृत्ततः क्षीणः हतः भवति।

उत्तरम् :

कस्मात् क्षीणः हतः भवति?

(ख) धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा अवधार्यताम्।

उत्तरम् :

कम् श्रुत्वा अवधार्यताम्?

(ग) वृक्षाः फलं न खादन्ति।

उत्तरम् :

के फलं न खादन्ति?

(घ) खलानाम् मैत्री आरम्भगुर्वी भवति।

उत्तरम् :

केषाम् मैत्री आरम्भगुर्वी भवति?

प्रश्न 7.

अधोलिखितानि वाक्यानि लोट्लकारे परिवर्तयत यथा -

सः पाठं पठति। सः पाठं पठतु।

(क) नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्ति। .....

(ख) सः सदैव प्रियवाक्यं वदति। .....

(ग) त्वं परेषां प्रतिकूलानि न समाचरसि। .....

(घ) ते वृत्तं यत्नेन संरक्षन्ति। .....

(ङ) अहम् परोपकाराय कार्यं करोमि। .....

उत्तरम् :

(क) नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्ति। - नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्तु।

(ख) सः सदैव प्रियवाक्यं वदति। - सः सदैव प्रियवाक्यं वदतु।

(ग) त्वं परेषां प्रतिकूलानि न समाचरसि। - त्वं परेषां प्रतिकूलानि न समाचर।

(घ) ते वृत्तं यत्नेन संरक्षन्ति। - ते वृत्तं यत्नेन संरक्षन्तु।

(ङ) अहम् परोपकाराय कार्यं करोमि। - अहं परोपकाराय कार्यं करवाणि।

परियोजनाकार्यम् -

प्रश्न (क) परोपकारविषयकं श्लोकद्वयं अन्विष्य स्मृत्वा च कक्षायां सस्वरं पठ।

उत्तरम् :

(i) अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।

परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम् ॥

(ii) परोपकाराय वहन्ति नद्यः, परोपकाराय फलन्ति वक्षाः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

**4marks**

प्रश्न 1.

कस्मात् हतो हतः?

(किसके नष्ट होने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है?)

उत्तर :

वृत्ततः क्षीणः हतो हतः।

(चरित्र के नष्ट होने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है।)

प्रश्न 2.

किं श्रुत्वा अवधार्यताम्?

(क्या सुनकर धारण करना चाहिए?)

उत्तर :

धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा अवधार्यताम्।

(धर्म के सार को सुनकर धारण करना चाहिए।)

प्रश्न 3.

परेषां कथं न समाचरेत्?

(दूसरों के साथ कैसा आचरण नहीं करना चाहिए?)

उत्तर :

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

(अपने से प्रतिकूल दूसरों के साथ आचरण नहीं करना चाहिए।)

प्रश्न 4.

प्रियवाक्यप्रदानेन के तुष्यन्ति?

(प्रिय वाक्य बोलने से कौन सन्तुष्ट होते हैं?)

उत्तर :

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे जन्तवः तुष्यन्ति।

(प्रिय वाक्य बोलने से सभी प्राणी सन्तुष्ट होते हैं।)

प्रश्न 5.

के स्वयं फलानि न खादन्ति?

(कौन स्वयं फल नहीं खाते हैं?)

उत्तर :

वृक्षाः स्वयं फलानि न खादन्ति।  
(वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते हैं।)

प्रश्न 6.

सतां विभूतयः कस्मै भवन्ति?  
(सज्जनों की सम्पत्तियाँ किसके लिए होती हैं?)

उत्तर :

सतां विभूतयः परोपकाराय भवन्ति।  
(सज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकार के लिए होती हैं।)

प्रश्न 7.

पुरुषैः सदा केषु प्रयत्नः कर्तव्यः?  
(मनुष्यों को सदा किनमें प्रयत्न करना चाहिए?)

उत्तर :

पुरुषैः सदा गुणेषु प्रयत्नः कर्तव्यः।  
(मनुष्यों को सदा गुणों में प्रयत्न करना चाहिए।)

प्रश्न 8.

गुणाः कुत्र दोषाः भवन्ति?  
(गुण कहाँ दोष हो जाते हैं?)

उत्तर :

गुणाः निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति।  
(गुण गुणहीन को पाकर दोष हो जाते हैं।)

प्रश्न 9.

नद्यः कथम् अपेयाः भवन्ति?  
(नदियाँ किस प्रकार अपेय हो जाती हैं?)

उत्तर :

नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।  
(नदियाँ समुद्र में मिलकर अपेय हो जाती हैं।)

प्रश्न 10.

कीदृशः दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः?  
(किस प्रकार का निर्धन व्यक्ति भी गुणों से हीन धनवान् के समान नहीं होता?)

उत्तर :

गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः।  
(गुणयुक्त निर्धन व्यक्ति भी गुणों से हीन धनवान् के समान नहीं होता है।)

प्रश्न 11.

किम् एति च याति च?  
(क्या आता है और जाता है?)

उत्तर :

वित्तम् एति च याति च।  
(धन आता है और जाता है।)

प्रश्न 12.

किम् श्रूयताम्?  
(क्या सुनना चाहिए?)

उत्तर :

धर्मसर्वस्वं श्रूयताम्।  
(धर्म अर्थात् कर्तव्य के सार को सुनना चाहिए।)

प्रश्न 13.

कस्मात् किञ्च वक्तव्यम्?  
(किसलिए और क्या बोलना चाहिए?)

उत्तर :

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे जन्तवः तुष्यन्ति, अतः तदेव वक्तव्यम्।  
(प्रिय वचन बोलने से सभी प्राणी सन्तुष्ट होते हैं, अतः वैसे ही प्रिय वचन बोलने चाहिए।)

प्रश्न 14.

कस्मिन् दरिद्रता न कर्तव्या?  
(किसमें कंजूसी नहीं करनी चाहिए?)

उत्तर :

प्रियवचने दरिद्रता न कर्तव्या।  
(प्रियवचन बोलने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए।)

प्रश्न 15.

काः स्वयमेव अम्भः न पिबन्ति?  
(कौन स्वयं ही अपना जल नहीं पीती हैं?)

उत्तर :

नद्यः स्वयमेव अम्भः न पिबन्ति। (नदियाँ स्वयं ही अपना जल नहीं पीती हैं।)



प्रश्न 16.

के स्वयमेव सस्यं नादन्ति?

(कौन स्वयं ही अन्न को नहीं खाते हैं?)

उत्तर :

वारिवाहाः स्वयमेव सस्यं नादन्ति। (बादल स्वयं ही अन्न नहीं खाते हैं।)

प्रश्न 17.

कः अगुणैः ईश्वरैः समः न भवति?

(कौन गुणहीन धनवानों के समान नहीं होता है?)

उत्तर :

गुणयुक्तः दरिद्रोऽपि अगुणैः ईश्वरैः समः न भवति।

(गुणवान् निर्धन व्यक्ति भी गुणहीन धनवानों के समान नहीं होता है।)

प्रश्न 18.

कीदृशः नद्यः प्रवहन्ति?

(किस प्रकार की नदियाँ बहती हैं?)

उत्तर :

आस्वाद्यतोयाः नद्यः प्रवहन्ति।

(स्वादिष्ट जल वाली नदियाँ बहती हैं।)

(ख) प्रश्न निर्माणम् :

प्रश्न 1.

रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्न-निर्माणं कुरुत -

1. वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्।
2. वृत्ततः क्षीणो हतो हतः।
3. आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
4. धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा अवधार्यताम्।
5. प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे जन्तवः तुष्यन्ति।
6. नद्यः स्वयमेव अम्भः न पिबन्ति।
7. वृक्षाः स्वयं फलानि न खादन्ति।
8. वारिवाहाः स्वयमेव सस्यं नादन्ति।
9. सतां विभूतयः परोपकाराय भवन्ति।
10. पुरुषैः सदा गुणेष्वेव प्रयत्नः कर्तव्यः।
11. गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि न अगुणैः ईश्वरैः समः।

12. दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना छायेव खलसजनानां मैत्री भवति।
13. हंसवियोगेन सरोवराणां हानिः भवति।
14. गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।
15. गुणाः निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति।
16. नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।
17. प्रियवचने दरिद्रता न कर्तव्या।
18. वित्तम् एति च याति च।

उत्तर :

प्रश्न-निर्माणम्

1. किम् यत्नेन संरक्षेत्?
2. कस्मात् क्षीणो हतो हतः?
3. कथं परेषां न समाचरेत्?
4. किम् श्रुत्वा अवधार्यताम्?
5. केन सर्वे जन्तवः तुष्यन्ति?
6. काः स्वयमेव अम्भः न पिबन्ति?
7. के स्वयं फलानि न खादन्ति?
8. के स्वयमेव सस्यं नादन्ति?
9. सतां विभूतयः किमर्थं भवन्ति?
10. पुरुषैः सदा केषु प्रयत्नः कर्तव्यः?
11. कीदृशः दरिद्रोऽपि न अगुणैः ईश्वरैः समः?
12. खलसज्जनानां मैत्री कीदृशी भवति?
13. हंसवियोगेन केषां हानिः भवति?
14. के गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति?
15. गुणाः कम् प्राप्य दोषाः भवन्ति?
16. नद्यः कथम् अपेयाः भवन्ति?
17. प्रियवचने का न कर्तव्या?
18. किम् एति च याति च?

**7marks**

क) परोपकारविषयकं श्लोकद्वयम् अन्विष्य स्मृत्वा च कक्षायां सस्वरं पठ।

1. परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः।

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः।

परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥

2. श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन,

दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।

विभाति कायः करुणापराणां,

परोपकारेण न चन्दनेन।

उत्तरम् छात्र इन श्लोकों को याद करें तथा अध्यापक के सहयोग से उनका कक्षा में सस्वर पाठ करें।

(ख) नद्याः एकं सुन्दरं चित्रं निर्माय संकलय्य वा वर्णयत यत् तस्याः तीरे मनुष्याः पशवः खगाश्च निर्विघ्नं जलं पिबन्ति।

उत्तरम् छात्र अध्यापक की सहायता से नदी का चित्र बनाएँ तथा वर्णन करें कि उसके तट पर मनुष्य, पशु, पक्षी सभी बिना कष्ट के पानी पी रहे हैं।

**सूक्तिमौक्तिकम् श्लोकों के सप्रसंग हिन्दी सरलार्थ एवं भावार्थ**

1. वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।

अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥ - मनुस्मृतिः

अन्वय-वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तम् एति च याति च, वित्ततः क्षीणः अक्षीणः वित्तः हतः तु हतः।

शब्दार्थ-वृत्तं = चरित्र। यत्नेन = प्रयत्नपूर्वक। संरक्षेद् = रक्षा करनी चाहिए। वित्तमेति (वित्तम् + एति) = पैसा आता है। याति = जाता है। क्षीणः = नष्ट हुआ। अक्षीणः = नष्ट न हुआ।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'सूक्तिमौक्तिकम्' से उद्धृत है। इस श्लोक का संकलन 'मनुस्मृति' से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस सूक्ति में चरित्र की रक्षा के विषय में बताया गया है।

सरलार्थ-चरित्र की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए क्योंकि धन तो आता-जाता रहता है। धन से हीन (नष्ट) व्यक्ति तो सम्पन्न (नष्ट न हुआ) हो सकता है, परन्तु चरित्र से हीन व्यक्ति तो पूरी तरह नष्ट हो जाता है।

भावार्थ-इस जीवन में मनुष्य के लिए सबसे मूल्यवान वस्तु उसका चरित्र है। क्योंकि अन्य वस्तुएँ तो जाने या विनष्ट होने के बाद पुनः प्राप्त हो सकती हैं। परन्तु चरित्र के नष्ट होने पर उसकी पुनः प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः मनुष्य को अपने चरित्र की रक्षा हर स्थिति में करनी चाहिए।

2. श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥ -विदुरनीतिः

अन्वय-धर्मसर्वस्वं श्रूयतां श्रुत्वा च अवधार्यताम् एव। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

शब्दार्थ धर्मसर्वस्वं = धर्म का सार। अवधार्यताम् = ग्रहण करो, पालन करो। आत्मनः = अपने से। प्रतिकूलानि = प्रतिकूल व्यवहार का। परेषां = दूसरों के प्रति। समाचरेत् = आचरण नहीं करना चाहिए।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'सूक्तिमौक्तिकम्' से उद्धृत है। इस सूक्ति का संकलन महान् नीतिज्ञ विदुर द्वारा रचित 'विदुरनीति' से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में अपने प्रतिकूल दूसरों के प्रति आचरण न करने के विषय में बताया गया है।

सरलार्थ-धर्म का सार सुनो और सुनकर उसे ग्रहण करो अर्थात् उसका पालन करो। अपने से प्रतिकूल व्यवहार का आचरण दूसरों के प्रति कभी नहीं करना चाहिए।

भावार्थ धर्म का सार यही है कि हमें कभी भी दूसरों के प्रति अपने से विपरीत आचरण नहीं करना चाहिए।

3. प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।

तस्माद् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥ - चाणक्यनीतिः

अन्वय सर्वे जन्तवः प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति तद् तस्माद् एव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता।

शब्दार्थ-प्रियवाक्यप्रदानेन = प्रिय वाक्य बोलने से। तुष्यन्ति = सन्तुष्ट होते हैं। वक्तव्यम् = कहने चाहिए। वचने = बोलने में। दरिद्रता = कंजूसी, निर्धनता।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ सूक्तिमौक्तिकम् से उद्धृत है। यह श्लोक 'चाणक्यनीति' नामक ग्रन्थ से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में बताया गया है कि हमें मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए।

सरलार्थ-सभी प्राणी मधुर वाक्य बोलने से सन्तुष्ट होते हैं, अतः मधुर वचन ही बोलने चाहिए तथा बोलने में कैसी दरिद्रता या निर्धनता।

भावार्थ-प्रत्येक मानव को मृदुभाषी होना चाहिए। उसकी वाणी में इतनी मिठास हो कि उसे सुनते ही उसके शत्रु का हृदय भी पिघल जाए। मीठे बोल में एक ऐसा जादू होता है जो हर एक को अपना बना लेता है। मधुर वाणी बोलने में कुछ भी धन नहीं लगता। मीठी वाणी का मूल्य तो केवल बुद्धिमान व्यक्ति ही लगा सकता है।

4. पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।

नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः

परोपकाराय सतां विभूतयः ॥ - सुभाषितरत्नभाण्डागारम्

अन्वय-नद्यः स्वयमेव अम्भः न पिबन्ति, वृक्षाः स्वयं फलानि न खादन्ति। वारिवाहाः खलु सस्यं न अदन्ति, सतां विभूतयः परोपकाराय (भवन्ति)।

शब्दार्थ-नाम्भः (न + अम्भः) = पानी नहीं। खादन्ति = खाते हैं। अदन्ति = खाते हैं। सस्यम् = अन्न, फसल। वारिवाहाः = । बादल। सतां = सज्जनों की। विभूतयः = सम्पत्तियाँ।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'सूक्तिमौक्तिकम्' से उद्धृत है। यह श्लोक 'सुभाषितरत्नभाण्डागारम्' से संकलित है। सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में परोपकारी पुरुष के स्वभाव के विषय में बताया गया है।

सरलार्थ-नदियाँ स्वयं जल नहीं पीती हैं, वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते हैं। बादल निश्चय ही फसल का भक्षण नहीं करते। इसी प्रकार सज्जनों की सम्पत्तियाँ भी दूसरों के उपकार के लिए होती हैं।

भावार्थ-नदियों में बहता हुआ जल नदी के काम न आकर देश और समाज के काम आता है। वृक्ष में लगे हुए फल स्वयं वृक्ष के उपयोग नहीं आता अपितु कोई अन्य ही उसका उपयोग करता है। इसी प्रकार बादल की वर्षा से जो अनाज पैदा होता है उसे बादल नहीं खाते। समाज के लोग ही उस अनाज को खाते हैं। इसी प्रकार सज्जनों की जो भी सम्पत्ति होती है, उसका उपयोग सज्जन स्वयं न करके समाज के लोगों की सहायता में लगा देते हैं। क्योंकि सज्जनों की सबसे बड़ी सम्पत्ति तो दूसरों का उपकार करना है।

5. गुणेष्वेव हि कर्तव्यः प्रयत्नः पुरुषैः सदा।  
गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः ॥ - मृच्छकटिकम्

अन्वय पुरुषैः सदा गुणेषु एव हि प्रयत्नः कर्तव्यः । गुणयुक्त दरिद्रः अपि अगुणैः ईश्वरैः समः न (अपितु तेभ्योऽधिक इति भावः)

शब्दार्थ-गुणेष्वेव (गुणेषु + एव) = गुणों में ही। अगुणैः = गुणहीनों से। ईश्वरैः = ऐश्वर्यशाली। समः = समान।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'सूक्तिमौक्तिकम्' से उद्धृत है। यह श्लोक महाकवि शूद्रक विरचित 'मृच्छकटिकम्' नामक नाटक से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में गुणों को प्राप्त करने की प्रेरणा के विषय में बताया गया है।

सरलार्थ-मनुष्य को सदा गुणों को प्राप्त करने का ही प्रयास करना चाहिए। दरिद्र होता हुआ भी गुणवान व्यक्ति ऐश्वर्यशाली गुणहीन के समान नहीं हो सकता।

भावार्थ मनुष्यों को सदा गुणों के अर्जन में ही प्रयत्न करना चाहिए। क्योंकि गुणवान् निर्धन व्यक्ति भी गुणहीन धनिकों से बढ़कर है। अर्थात् निर्धन गुणवान् व्यक्ति धनवान् गुणहीन व्यक्ति से श्रेष्ठ है। क्योंकि गुणवान् व्यक्ति अपने गुणों से धन एकत्रित कर सकता है, जबकि गुणहीन व्यक्ति धन का नाश करता है।

#### 6. आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण

लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।

दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना

छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ - नीतिशतकम्

अन्वय-खल सज्जनानाम् मैत्री आरम्भगुर्वी, क्रमेण क्षयिणी पुरा लघ्वी पश्चात् वृद्धिमती च दिनस्य पूर्वार्द्ध-परार्द्ध भिन्ना छाया इव (भवति)।

शब्दार्थ खल सज्जनानाम् = दुर्जनों और सज्जनों की। मैत्री = मित्रता। आरम्भगुर्वी = आरम्भ में बड़ी, क्रमेण । क्षयिणी = क्रम से क्षीण होने वाली। पुरा लघ्वी = पहले छोटी। पश्चात् वृद्धिमती च = और पीछे बढ़ने वाली। दिनस्य = दिन के। पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना = पूर्वार्द्ध और अपरार्द्ध में भिन्न रूप वाली। छाया इव = छाया की तरह होती है।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'सूक्तिमौक्तिकम्' से उद्धृत है। यह 'भर्तृहरि' द्वारा रचित 'नीतिशतकम्' नामक ग्रन्थ से संकलित है। .

सन्दर्भ-निर्देश-प्रस्तुत श्लोक में दुर्जनों और सज्जनों की मित्रता में अन्तर के विषय में बताया गया है।

सरलार्थ-दुर्जनों की मित्रता प्रारम्भ में अधिक दिन के पूर्वार्द्ध के समान तथा क्रम से क्षीण होने वाली तथा सज्जनों की मित्रता पहले कम और बाद में बढ़ने वाली दिन के उत्तरार्द्ध की छाया की तरह होती है।

भावार्थ-दुर्जनों की मित्रता दिन के प्रथम आधे भाग में रहने वाली छाया की तरह प्रारम्भ में अधिक और फिर धीरे-धीरे कम होती जाती है एवं सज्जनों की मित्रता उत्तरार्ध की छाया की तरह पहले कम और बाद में बढ़ने वाली होती है।

7. यत्रापि कुत्रापि गता भवेयु  
 हँसा महीमण्डलमण्डनाय।  
 हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां  
 येषां मरालैः सह विप्रयोगः ॥ - भामिनीविलासः

अन्वय महीमण्डलमण्डनाय हंसाः यत्रापि कुत्रापि गता भवेयुः हि हानिः तु तेषां सरोवराणाम्  
 येषां मरालैः सह विप्रयोगः (भवति)।

शब्दार्थ-मण्डनाय = सुशोभित करने के लिए। हंसा = हंस। मराला = हंस। सरोवराणां =  
 तालाबों का। विप्रयोगः = वियोग, अलग होना। हानि = हानि।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ  
 'सूक्तिमौक्तिकम्' से उद्धृत है। यह श्लोक पं० जगन्नाथ द्वारा रचित 'भामिनीविलास' नामक  
 ग्रन्थ से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में उत्तम पुरुष के सम्पर्क से होने वाली शोभा की प्रशंसा के विषय  
 में बताया गया है।

सरलार्थ पृथ्वीमण्डल को सुशोभित करने के लिए हंस जहाँ-कहीं भी अर्थात् सभी जगह  
 प्रवेश करने में समर्थ हैं, हानि तो उन सरोवरों की ही है जिनका उन हंसों से वियोग हो जाता  
 है।

भावार्थ-इस श्लोक में कवि ने हंसों के माध्यम से उत्तम पुरुष की प्रशंसा की है। हंस जिस  
 सरोवर में रहते हैं, उस सरोवर की शोभा अपने-आप बढ़ जाती है। उसी प्रकार उत्तम पुरुष  
 जिस स्थान पर रहते हैं उस स्थान का महत्त्व अपने-आप ही बढ़ जाता है। परिस्थितिवश जब  
 हंस तालाब को छोड़कर जाता है तो उसके जाने का दुःख तालाब को सहन करना पड़ता  
 है। उसी प्रकार जब उत्तम पुरुष किसी अन्य स्थान पर जाने लगते हैं तो उनके जाने का  
 दुःख उस स्थान के लोगों को सहना पड़ता है। हंस के समान उत्तम पुरुष पृथ्वी पर सभी  
 जगह अपना स्थान बना लेते हैं।

8. गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ।  
 ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।



आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः  
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥ - हितोपदेशः

अन्वय-गुणज्ञेषु गुणाः गुणाः भवन्ति, निर्गुणं प्राप्य ते दोषाः भवन्ति। नद्यः आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति समुद्रम् आसाद्य अपेयाः भवन्ति।

शब्दार्थ-गुणज्ञेषु = गुणों को जानने वालों में। दोषाः = दुर्गुण। आस्वाद्यतोयाः = स्वादयुक्त जल वाली। आसाद्य = प्राप्त करके। अपेयाः = न पीने योग्य।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'सूक्तिमौक्तिकम्' से लिया गया है। इस श्लोक का संकलन पं० नारायण द्वारा रचित 'हितोपदेश' से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में गुणवान लोगों के सम्पर्क में रहने के लाभ के विषय में बताया गया है।

सरलार्थ गुणों को जानने वाले लोगों में रहने के कारण ही गुण, गुण होते हैं। गुणहीनों को प्राप्त करके वे (गुण) दोष बन जाते हैं। नदियाँ स्वादयुक्त जल वाली होती हैं, परन्तु समुद्र को प्राप्त करके न पीने योग्य हो जाती हैं।

भावार्थ-दोष और गुण संसर्ग से ही उत्पन्न होते हैं। गुणवानों के बीच में यदि कोई निर्गुण व्यक्ति भी रहता है तो वह उनके सम्पर्क से गुणवान बन जाता है। दूसरी ओर, निर्गुणों के सम्पर्क में आकर गुणवान् व्यक्ति भी निर्गुण बन जाता है। जैसे स्वादिष्ट जल वाली नदियों का पानी जब समुद्र में मिलता है तो उसके सम्पर्क में स्वादिष्ट जल भी खारा बन जाता है।

### अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत  
(एक पद में उत्तर लिखिए)
- (क) वित्ततः क्षीणः कीदृशः भवति?
- (ख) कस्य प्रतिकूलानि कार्याणि परेषां न समाचरेत्?
- (ग) कुत्र दरिद्रता न भवेत्?
- (घ) वृक्षाः स्वयं कानि न खादन्ति?
- (ङ) का पुरा लघ्वी भवति?

उत्तराणि:

- (क) अक्षीणः,
- (ख) आत्मनः,
- (ग) वचने,
- (घ) फलानि,
- (ङ) दिनस्य छाया।

2. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषयां लिखत

(निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए)

- (क) यत्नेन किं रक्षेत् वित्तं वृत्तं वा?
- (ख) अस्माभिः (किं न समाचरेत्) कीदृशम् आचरणं न कर्तव्यम्?
- (ग) जन्तवः केन तुष्यन्ति?
- (घ) सज्जनानां मैत्री कीदृशी भवति?
- (ङ) सरोवराणां हानिः कदा भवति?

उत्तराणि:

- (क) यत्नेन वृत्तं रक्षेत्।
- (ख) अस्माभिः आत्मनः प्रतिकूलम् आचरणं न कर्तव्यम्।
- (ग) जन्तवः प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति।
- (घ) सज्जनानां मैत्री पुरा लब्धी पश्चात् च वृद्धिमती भवति।
- (ङ) मरालैः सह वियोगेण सरोवराणां हानिः भवति।

3. 'क' स्तम्भे विशेषणानि 'ख' स्तम्भे च विशेष्याणि दत्तानि, तानि यथोचितं योजयत

(स्तम्भ 'क' में विशेषण शब्द व स्तम्भ 'ख' में विशेष्य शब्द दिए गए हैं, उन्हें यथोचित जोड़िए)

'क' स्तम्भः – 'ख' स्तम्भः

- (क) आस्वाद्यतोयाः (1) खलानां मैत्री
- (ख) गुणयुक्तः (2) सज्जनानां मैत्री
- (ग) दिनस्य पूर्वार्द्धभिन्ना (3) नद्यः
- (घ) दिनस्य परार्द्धभिन्ना (4) दरिद्रः

उत्तराणि:

'क' स्तम्भः – 'ख' स्तम्भः

- (क) आस्वाद्यतोयाः (3) नद्यः
- (ख) गुणयुक्तः (4) दरिद्रः

- (ग) दिनस्य पूर्वार्द्धभिन्ना (1) खलानां मैत्री  
(घ) दिनस्य परार्द्धभिन्ना (2) सज्जनानां मैत्री

#### 4. अधोलिखितयोः श्लोकद्वयोः आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत

(निम्नलिखित दो श्लोकों के आशय (भावार्थ) हिन्दी भाषा अथवा अंग्रेजी भाषा में लिखिए)

(क) आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण

लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।

दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना

छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥

(ख) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।

तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥

उत्तराणि:

(क) भावार्थ प्रस्तुत श्लोक में आचार्य भर्तृहरि ने दुष्टों और सज्जनों की मित्रता में अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा है कि जिस प्रकार छाया दिन की शुरुआत में बड़ी होती है तथा फिर आहिस्ता-आहिस्ता छोटी होती जाती है, उसी प्रकार दुष्टों की मित्रता पहले गहरी होती है और धीरे-धीरे कम होती जाती है। इसके विपरीत जिस प्रकार दोपहर में छाया छोटी होती है, धीरे-धीरे बढ़ती है, इसी प्रकार सज्जनों की मित्रता पहले कम तथा धीरे-धीरे दूसरे के गुण-स्वभाव आदि समझकर बढ़ती है।

(ख) भावार्थ-प्रस्तुत श्लोक में आचार्य चाणक्य ने वचन के महत्त्व के विषय में कहा है कि मधुर वचन बोलने से सभी प्रसन्न होते हैं, अतः मनुष्य को सदैव मधुर वचन बोलने में कृपणता नहीं करनी चाहिए।

#### 5. अधोलिखितपदेभ्यः भिन्नप्रकृतिकं पदं चित्वा लिखत

(निम्नलिखित शब्दों से भिन्न प्रकृति वाले शब्द चुनकर लिखें)

(क) वक्तव्यम्, कर्तव्यम्, सर्वस्वम्, हन्तव्यम्।

(ख) यत्नेन, वचने, प्रियवाक्यप्रदानेन, मरालेन।

(ग) श्रूयताम्, अवधार्यताम्, धनवताम्, क्षम्यताम्।

(घ) जन्तवः, नद्यः, विभूतयः, परितः।

उत्तराणि:

(क) सर्वस्वम्,

(ख) मरालेन,

- (ग) धनवताम्,  
(घ) परितः।

6. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्नवाक्यनिर्माणं कुरुत  
(स्थूल पदों के आधार पर प्रश्न वाक्य का निर्माण कीजिए)

- (क) वृत्ततः क्षीणः हतः भवति।  
(ख) धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा अवधार्यताम्।  
(ग) वृक्षाः फलं न खादन्ति।  
(घ) खलानाम् मैत्री आरम्भगुर्वी भवति।

उत्तराणि:

- (क) कस्मात् क्षीणः हतः भवति?  
(ख) किं श्रुत्वा अवधार्यताम् ?  
(ग) के फलं न खादन्ति?  
(घ) केषाम् मैत्री आरम्भगुर्वी भवति?

7. अधोलिखितानि वाक्यानि लोट्लकारे परिवर्तयत

(निम्नलिखित वाक्यों का लोट्लकार में परिवर्तन कीजिए)

यथा-सः पाठं पठति। – सः पाठं पठतु।

- (क) नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्ति। .....  
(ख) सः सदैव प्रियवाक्यं वदति। .....  
(ग) त्वं परेषां प्रतिकूलानि न समाचरसि। .....  
(घ) ते वृत्तं यत्नेन संरक्षन्ति। .....  
(ङ) अहम् परोपकाराय कार्यं करोमि। .....

उत्तराणि:

- (क) नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्ति। नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्तु।  
(ख) सः सदैव प्रियवाक्यं वदति। सः सदैव प्रियवाक्यं वदतु।  
(ग) त्वं परेषां प्रतिकूलानि न समाचरसि। त्वं परेषां प्रतिकूलानि न समाचर।  
(घ) ते वृत्तं यत्नेन संरक्षन्ति। ते वृत्तं यत्नेन संरक्षन्तु।  
(ङ) अहं परोपकाराय कार्यं करोमि। अहं परोपकाराय कार्यं करवाणि।

श्र 1.

"वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्" इत्यस्मिन् वाक्ये रेखांकितपदं वर्तते -

(अ) क्रियापदं

(ब) कर्तृपदम्

(स) कर्मपदं

(द) सर्वनाम

उत्तरम् :

(अ) क्रियापदं

प्रश्न 2.

"वित्तमेति च ..... च।"

उपर्युक्तवाक्ये रिक्तस्थाने पूरणीयक्रियापदमस्ति

(अ) यान्ति

(ब) याति

(स) यासि

(द) यामि

उत्तरम् :

(ब) याति

प्रश्न 3.

"..... प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।"

उपर्युक्तवाक्ये रिक्तस्थाने पूरणीयं समुचितपदं वर्तते

(अ) आत्मन्

(ब) आत्मानं

(स) आत्मनः

(द) आत्मनि

उत्तरम् :

(स) आत्मनः

प्रश्न 4.

"प्रियवाक्यप्रदानेन .....तुष्यन्ति जन्तवः।"

उपर्युक्तवाक्यस्य रिक्तस्थाने पूरणीयं समुचितं पदं वर्तते

(अ) सर्वम्

(ब) सर्वाः

(स) सर्वस्मै

(द) सर्वे  
उत्तरम् :  
(द) सर्वे

प्रश्न 5.

"तस्माद् तदेव वक्तव्यम्" इत्यस्मिन् वाक्ये रेखाङ्कितपदे प्रयुक्तं प्रत्ययं वर्तते

(अ) तव्यत्  
(ब) ल्यप्  
(स) क्त्वा  
(द) तरप्  
उत्तरम् :  
(अ) तव्यत्

## सूक्तिमौक्तिकम् Summary and Translation in Hindi

पाठ-परिचय - संस्कृत साहित्य में नीति-ग्रन्थों की समृद्ध परम्परा है। इनमें सारगर्भित और सरल रूप में नैतिक शिक्षाएँ दी गई हैं, जिनका उपयोग करके मनुष्य अपने जीवन को सफल और समृद्ध बना सकता है। ऐसे ही मनोहारी और बहुमूल्य सुभाषित यहाँ संकलित हैं, जिनमें सदाचरण की महत्ता, प्रियवाणी की आवश्यकता, परोपकारी पुरुष का स्वभाव, गुणार्जन की प्रेरणा, मित्रता का स्वरूप और उत्तम पुरुष के सम्पर्क से होने वाली शोभा की प्रशंसा और सत्संगति की महिमा आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है।